

एस. एफ. आर. आई., प्रचार पत्रिका क्रमांक-4

पड़त भूमि विकास हेतु

उपयुक्त प्रजाति : लेंडिया
(लेगरस्ट्रोमिया पारवीफ्लोरा)



1991

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर

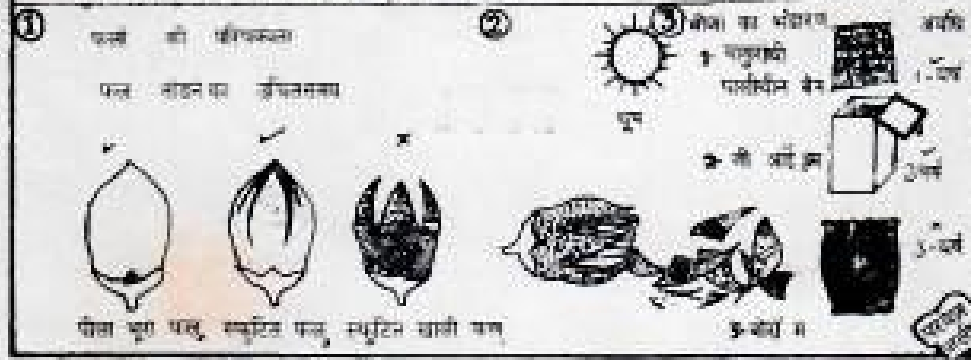
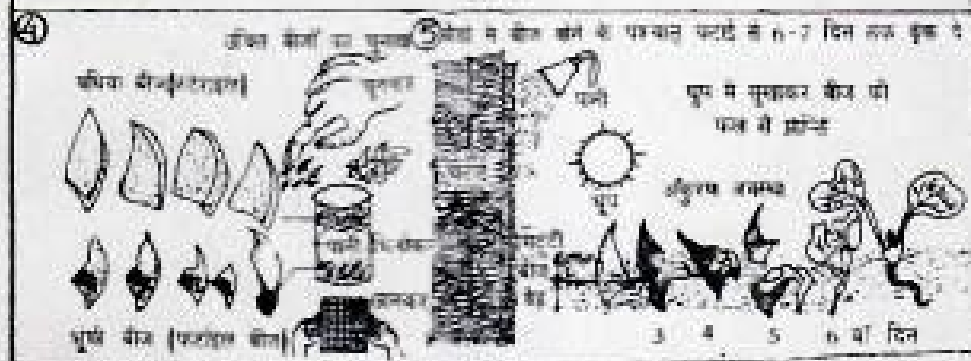
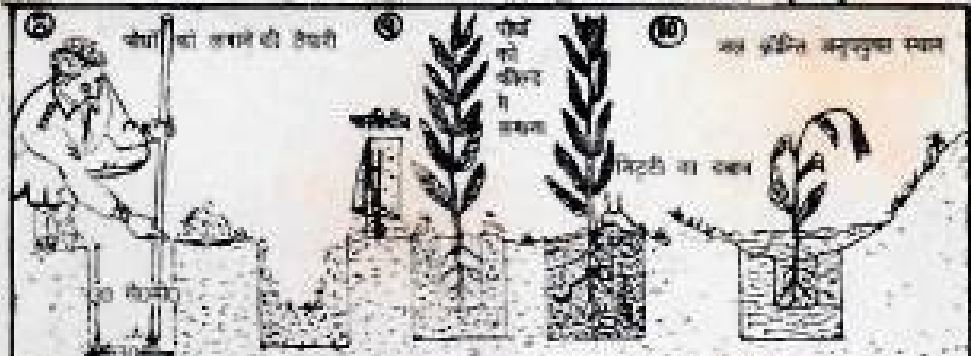
पड़त भूमि विकास हेतु उपयुक्त प्रजाति : लेंडिया

वनस्पतिक नाम : लेगरस्ट्रोमिया पारवीफ्लोरा

कुल : लिथरेसी

स्थानीय नाम : लेंडिया, सेन्हा

लेंडिया के बीज संकलन, संरक्षण एवं रोपण तक की तकनीकी प्रक्रियाओं का चित्रांकन (1-10)



लैंडिया वृक्ष की विशेषतायें

- (१) यह कम उर्वरकता वाली भूमि, खेती के अयोग्य भूमि तथा बंजर भूमि, (समस्या प्रस्त मिट्टियों) के लिये उपयुक्त है।
- (२) इसकी लकड़ी मजबूत होती है, जिसका उपयोग किसानों तथा छोटे तबके के लोगों के द्वारा छोटे मोटे कार्यों में जैसे हल, राफ्टर, चौखट, मेयाल, हाते के खम्भों आदि के रूप में किया जाता है। इसकी लकड़ी ईंधन के लिये उपयुक्त है।
- (३) ठूटों से कापिस का उत्पादन काफी होता है, जिससे भविष्य के लिये वृक्ष तैयार किये जा सकते हैं। सबसे बड़ी विशेषता यह भी है कि इसके पेड़ काट देने के उपरान्त खाली स्थान और भी तेजी से भरने लगता है।
- (४) मिट्टी के कटाव को रोकता है।
- (५) कीड़ों के प्रकोप आग एवं सूखे का प्रतिरोधक है।
- (६) रूट नकस द्वारा नये पौधों का उत्पादन करता है, जिससे क्षेत्र में प्राकृतिक रूप से वृद्धि होती रहती है।
- (७) इसके पौधों एवं पत्तियों को पशु नहीं खाते हैं, जिससे चराई से सुरक्षित है।

बीजों का एकत्रीकरण

वृक्ष का चुनाव

प्रयोग द्वारा यह देखा गया है कि 90 से 130 से० मी० गुन्नाई वाले पेड़ों से प्राप्त बीजों में अंकुरण प्रतिशत तथा प्राप्त पौधों का प्रतिशत अधिक होता है। बीज एकत्रीकरण हेतु चुने गये पौधों का तना सीधा, ऐठन तथा खोखलापन रहित होना चाहिए। इस प्रकार से चयनित बीजों से उत्पन्न पौधे अच्छी बढ़त तथा अच्छे गुण वाले होंगे।

फलों की परिपक्वता

फल मार्च में पक जाता है तब फलों का रंग हरे से पीला भूरा हो जाता है। इनका फल स्फुटन वाला होता है, जिसमें 3 से 6 तक कक्ष होते हैं तथा इनमें बीजों की संख्या 5 से 13 तक होती है। परन्तु अंकुरण करने वाले (फर्टाइल) बीजों की संख्या केवल 1-5 तक ही हो सकती है। शेष बीज बिना अंकुरण क्षमता (इनफर्टाइल) वाले होते हैं, जिन्हें बिना कठिनाई के अलग किया जा सकता है। जब फलों के ऊपरी भाग में फटाव होने लगे उसी समय फलों को तोड़ लेना चाहिए तथा उसे घूप में सुखाने डाल देना चाहिए। 3-4 दिनों में कैप्सूल फट जाते हैं, जिनसे सहज ही बीज प्राप्त हो जाते हैं।

सावधानी

यदि फलों को तोड़कर 6-8 दिन तक बिना सुखाये हुए रखा जाये तो बीज शार्द्रता के कारण फफूंद लगने से काले हो जाते हैं तथा अंकुरण प्रतिशत कम हो जाता है। जिन फलों में कीड़ों ने छेद किये हों उन फलों को सुखाने के पहले अलग कर देना चाहिए।

बीजों का प्रकार तथा उचित बीजों का चुनाव

एक किलोग्राम में बीजों की संख्या लगभग 56 हजार होती है। लेंडिया के बीजों को ध्यान से देखने पर इसे हम स्पष्ट रूप से दो समुदाय में बांट सकते हैं।

(अ) स्टेराइल बीज (मूठे बीज) यह आकार में बड़े तथा मोटे होते हैं इनमें पतला बीज पंख नहीं होता इनका क्षेत्रफल 0.65 से 1.30 वर्ग सेंटीमीटर होता है। बीज लाट में इनका प्रतिशत 52-90 तक होता है। इनका भार 37.31 ± 7.66 मिलीग्राम होता है।

(ब) फर्टाइल बीज (सच्चे/भ्रूणी बीज) यह स्टेराइल बीजों से आकार में लगभग आधे होते हैं इनका क्षेत्रफल 0-20 0.64 वर्ग सेंटीमीटर होता है तथा भार 9.55 ± 1.80

मिलीग्राम होता है। बीज लाट में इनका प्रतिशत 10-48 होता है। केवल इस प्रकार के बीज ही अंकुरण में सक्षम होते हैं।

बीजों का अंकुरण

राज्य वन अनुसंधान संस्थान की बीज प्रमाणीकरण प्रयोगशाला में मध्यप्रदेश के विभिन्न स्थानों के बीजों का अंकुरण किया गया जिसमें यह पाया गया कि ठंडे स्थानों की अपेक्षा गर्म स्थानों के बीजों में अच्छा अंकुरण होता है। अंकुरण 7 से 47 प्रतिशत तक होता है, जो 4 दिनों से 15 दिनों के भीतर पूरा हो जाता है। परन्तु यदि फर्टाइल बीजों को छांटकर बोया जाये तो अंकुरण 80 से 90 प्रतिशत तक मिलता है। बीजों को 18-24 घंटे पानी में भिगोने पर स्टैराइल बीज पानी में तैरने रहते हैं। इन्हें अलग कर देते हैं तथा जो बीज (फर्टाइल) पानी में डूब जाते हैं उनमें अंकुरण प्रतिशत 40 से 56 प्रतिशत तक होता है।

रोपण विधि

रोपण बेटों का चयन सीधे प्रकाश वाले स्थानों पर करना चाहिए। 10 मी. x 1 मी. बेटों में 1.5 से 2 किलो तक बीज बोया जा सकता है। बीजों को बोने के पश्चात लगभग 1 से.मी. मोटी छत्ती मिट्टी से ढक देना चाहिए, जिसके ऊपर पैरा या पत्तल की चटाई बिछा कर पानी देना चाहिए। 6-7 दिनों के पश्चात चटाई अलग कर देना चाहिए। बीजों को बोने का उचित समय अग्रेज से मई है। 4 से 8 पत्तियाँ होने पर मई-जून माह में अंकुरित पौधों को पोलीथिन बैग में स्थानांतरित कर देना चाहिए। पोलीथिन में भरी गई मिट्टी, रेत तथा खाद का मिश्रण 1:1:1 के अनुपात में होना चाहिए।

पौधों को लगाना

पौधों को जल संग्रहण (वाटर लॉग्ड) स्थान को छोड़कर किसी भी अन्य स्थान पर लगाया जा सकता है।